सातवाँ अध्याय

श्रीपराशर उवाच

ततोऽभिध्यायतस्तस्य जज्ञिरे मानसाः प्रजाः। तच्छरीरसमुत्पन्नैः कार्यैस्तैः करणैः सह।
क्षेत्रज्ञाः समवर्त्तन्त गात्रेभ्यस्तस्य धीमतः ॥१॥
ते सर्वे समवर्त्तन्त ये मया प्रागुदाहृताः। देवाद्याः स्थावरान्ताश्च त्रैगुण्यविषये स्थिताः ॥२॥
एवंभूतानि सृष्टानि चराणि स्थावराणि च ॥३॥
यदास्य ताः प्रजाः सर्वा न व्यवर्धन्त धीमतः। अथान्यान्मानसान्पुत्रान्सदृशानात्मनोऽसृजत् ॥४॥
भृगुं पुलस्त्यं पुलहं क्रतुमङ्गिरसं तथा। मरीचिं दक्षमत्रिं च वसिष्ठं चैव मानसान् ॥५॥
नव ब्रह्माण इत्येते पुराणे निश्चयं गताः ॥६॥
ख्यातिं भूतिं च सम्भूतिं क्षमां प्रीतिं तथैव च। सन्नतिं च तथैवोर्ज्जामनसूयां तथैव च ॥७॥
प्रसूतिं च ततः सृष्ट्वा ददौ तेषां महात्मनाम्। पत्न्यो भवध्वमित्युक्त्वा तेषामेव तु दत्तवान् ॥८॥
सनन्दनादयो ये च पूर्वसृष्टास्तु वेधसा। न ते लोकेष्वसज्जन्त निरपेक्षाः प्रजासु ते ॥९॥
सर्वे तेऽभ्यागतज्ञाना वीतरागा विमत्सराः। तेष्वेवं निरपेक्षेषु लोकसृष्टौ महात्मनः ॥१०॥
ब्रह्मणोऽभून्महान् क्रोधस्त्रैलोक्यदहनक्षमः। तस्य क्रोधात्समुद्भूतज्वालामालातिदीपितम्।
ब्रह्मणोऽभूत्तदा सर्वं त्रैलोक्यमखिलं मुने ॥११॥
भ्रकुटीकुटीलात्तस्य ललाटात्क्रोधदीपितात्। समुत्पन्नस्तदा रुद्रो मध्याह्नार्कसमप्रभः ॥१२॥
अर्धनारीनरवपुः प्रचण्डोऽतिशरीवान्। विभजात्मानमित्युक्त्वा तं ब्रह्मान्तर्दधे ततः ॥१३॥

मरीचि आदि प्रजापतियों, तामसिक सर्ग, स्वायम्भुव मनु एवं शतरूपा तथा उनकी सन्तानों का वर्णन

श्रीपराशर महर्षि ने कहा— उसके पश्चात् ब्रह्माजी के ध्यान करने पर उनके शरीर से, शरीर तथा इन्द्रियों के साथ मानस प्रजाएँ उत्पन्न हुयीं ॥१॥ जिनका वर्णन मैं पहले कर चुका हूँ वे सभी देवता से लेकर स्थावर पर्यन्त जीव जो त्रिगुणात्मक चर एवं अचर जीव थे उसी प्रकार उत्पन्न हुए ॥२-३॥ बुद्धिमान् प्रजापति की ये प्रजाएँ जब नहीं बढ़ी तो उन्होंने अपने ही सदृश भृगु, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, अङ्गिरा, मरीचि, अत्रि, दक्ष तथा वसिष्ठ इन नव मानस पुत्रों की अपने शरीर से ही सृष्टि की। पुराणों में इन मानस पुत्रों को नव ब्रह्मा कहा गया है ॥४-६॥ इसके पश्चात् ख्याति, भूति, सम्भूति, क्षमा, प्रीति, सन्नति, ऊर्जा, अनसूया तथा प्रसूति इन नव कन्याओं की सृष्टि करके, उन्हें, 'तुम इनकी पत्नी बन जाओ' ऐसा कहकर उन महर्षियों को सौंप दिया ॥७-८॥ ब्रह्माजी ने पहले जिस सनन्दन आदि की सृष्टि की थी वे सन्तान निरापेक्ष थे; अतएव वे संसार तथा सन्तान में नहीं प्रवृत्त हुए ॥९॥ वे सभी ज्ञान सम्पन्न, विरक्त, मत्सरादि दोषों से रहित थे। उन सबों के इस तरह से निरपेक्ष तथा लोकसृष्टि पराङ्मुख देखकर महात्मा ब्रह्माजी को, त्रैलोक्य को भस्म कर देने में समर्थ क्रोध उत्पन्न हुआ, उनके उस क्रोध से त्रैलोक्य ज्वाला समूह से जलने लगा ॥१०-११॥ उस समय उनकी टेढ़ी भृकुटी एवं क्रोध से सन्तप्त ललाट से रुद्र की उत्पत्ति हुयी। वे दोपहर के सूर्य के समान कान्ति वाले थे ॥१२॥ उन रुद्र का शरीर आधा नर का और आधा नारी का था। उनका शरीर अत्यन्त भयङ्कर था। उनको 'तुम अपने शरीर का विभाग करो' इस तरह से कहकर ब्रह्माजी अन्तर्धान हो गये ॥१३॥ इस तरह से कहने पर रुद्र ने अपने शरीर को पुरुष तथा स्त्री इन दो भागों में विभक्त कर दिया। उसके

तथोक्तोऽसौ द्विधा स्त्रीत्वं पुरुषत्वं तथाऽकरोत्। विभेदपुरुषत्वं च दशधा चैकधा पुनः ॥१४॥
सौम्यासौम्यैस्तदा शान्ताऽशान्तैः स्त्रीत्वं च स प्रभुः। विभेद बहुधा देवः स्वरूपैरसितैः सितैः ॥१५॥
ततो ब्रह्माऽऽत्मसम्भूतं पूर्वं स्वायम्भुवं प्रभुः। आत्मानमेव कृतवान्प्रजापाल्ये मनुं द्विज ॥१६॥
शतरूपां च तां नारीं तपोनिर्धूतकल्मषाम्। स्वायम्भुवो मनुर्देवः पत्नीत्वे जगृहे प्रभुः ॥१७॥
तस्मात्तु पुरुषाद्देवी शतरूपा व्यजायत। प्रियव्रतोत्तानपादौ प्रसूत्याकूतिसंज्ञितम् ॥१८॥
कन्याद्वयं च धर्मज्ञ रूपौदार्यगुणान्वितम्। ददौ प्रसूतिं दक्षाय आकूतिं रुचये पुरा ॥१९॥
प्रजापतिः स जग्राह तयोर्जज्ञे सदक्षिणः। पुत्रो यज्ञो महाभाग दम्पत्योर्मिथुनं ततः ॥२०॥
यज्ञस्य दक्षिणायां तु पुत्रा द्वादश जज्ञिरे। यामा इति समाख्याता देवाः स्वायमभुवे मनौ ॥२१॥
प्रसूत्यां च तथा दक्षश्चतस्रो विंशतिस्तथा। ससर्ज कन्यास्तासां च सम्यङ् नामानि मे शृणु ॥२२॥
श्रद्धा लक्ष्मीर्धृस्तिुष्टिर्मेधा पुष्टिस्तथा क्रिया। बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः सिद्धिः कीर्तिस्त्रयोदशी ॥२३॥
पत्न्यर्थं प्रतिजग्राह धर्मो दाक्षायणीः प्रभुः। ताभ्यः शिष्टाः यवीयस्य एकादश सुलोचनाः ॥२४॥
ख्यातिः सत्यथ समभूतिः स्मृतिः प्रीतिः क्षमा तथा। सन्ततिश्चानसूया च ऊर्ज्जा स्वाहा स्वधा तथा ॥२५॥
भृगुर्गवो मरीचिश्च तथा चैवाङ्गिरा मुनिः। पुलस्त्यः पुलहश्चैव क्रतुश्चर्षिवरस्तथा ॥२६॥
अत्रिर्वसिष्ठो वह्निश्च पितरश्च यथाक्रमम् ख्यात्याद्या। जगृहुः कन्या मुनयो मुनिसत्तम ॥२७॥
श्रद्धा कामं चला दर्पं नियमं धृतिरात्मजम्। सन्तोषं च तथा तुष्टिर्लोभं पुष्टिरसूयत ॥२८॥
मेधा श्रुतं क्रिया दण्डं नयं विनयमेव च ॥२९॥

बाद उन्होंने अपने पुरुष भाग को ग्यारह भागों में विभक्त कर दिया ॥१४॥ इसी तरह उन्होंने स्त्री भाग को सौम्य-असौम्य, शान्त-अशान्त, तथा सित एवं असित (श्याम तथा गौर) आदि बहुत से विभागों में विभक्त कर दिया॥१५॥ हे द्विज ! उसके पश्चात् ब्रह्माजी ने अपने से उत्पन्न अपने स्वरूप भूत स्वायम्भुव मनु को प्रजा पालन के कर्म में नियुक्त कर दिया ॥१६॥ और तपस्या करने के कारण जिनके सारे पाप विनष्ट हो गये थे उन शतरूपा नाम की नारी को स्वायम्भुव मनु ने अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया ॥१७॥ हे धर्मज्ञ ! उन स्वायम्भुव मनु से शतरूपा के दो पुत्र उत्पन्न हुए प्रियव्रत तथा उत्तानपाद, तथा रूप एवं औदार्य गुण ये युक्त दो कन्यायें उत्पन्न हुयी प्रसूति तथा आकूति । उन्होंने प्रसूति का विवाह दक्ष से और आकूति का विवाह मरीचि प्रजापति से कर दिया ॥१८-१९॥ हे महाभाग रुचि प्रजापति ने आकूति को पत्नी के रूप में स्वीकार किया, और उस दम्पती से पुत्र यज्ञ तथा पुत्री दक्षिणा ये दो जुड़वा सन्तानें हुयीं ॥२०॥ उसके पश्चात् यज्ञ के दक्षिणा में बारह पुत्र उत्पन्न हुए, जो स्वायम्भुव मन्वन्तर में याम नामक देवता कहलाये ॥२१॥ दक्ष ने प्रसूति में चौबीस कन्याओं को उत्पन्न किया उनका मुझसे तुम नाम सुनो॥२२॥ उनका नाम हैं— श्रद्धा, लक्ष्मी, धृति, तुष्टि, मेधा, पुष्टि, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वायु, शान्ति, सिद्धि तथा तेरहवीं कीर्ति ॥२३॥ इन तेरहो दक्ष की पुत्रियों को धर्म ने पत्नी के रूप में स्वीकार किया । उनसे बची हुई छोटी ग्यारह सुन्दरियाँ हैं ॥२४॥ ख्याति, सती, सम्भूति, स्मृति, प्रीति, क्षमा, सन्नति, अनसूया, ऊर्जा, स्वाहा तथा स्वधा॥२५॥ हे मुनिश्रेष्ठ ! उन कन्याओं को क्रमशः भृगु, गव, मरीचि, अङ्गिरामुनि, पुलस्त्य, पुलह ऋषिप्रवर क्रतु॥२६॥ अत्रि, वसिष्ठ, वह्नि (अग्नि) तथा पितरों ने ख्याति आदि को पत्नी के रूप में ग्रहण किया ॥२७॥ श्रद्धा से काम, चला (लक्ष्मी) से दर्प, (अभिमान) धृति से नियम, तुष्टि से सन्तोष तथा पुष्टि से लोभ उत्पन्न हुए ॥२८॥ मेधा से श्रुत, क्रिया से दण्ड, नय और विनय, बुद्धि से बोध, सिद्धि से सुख, तथा कीर्ति से यश की उत्पत्ति हुयी । ये

बोधं बुद्धिस्तथा लज्जा विनयं वपुरात्मजम् । व्यवसायं प्रजज्ञे वै क्षेमं शान्तिरसूयत ॥३०॥
सुखं सिद्धिर्यशः कीर्त्तिरित्येते धर्मसूनवः । कामाद्रतिः सुतं हर्षं धर्मपौत्रमसूयत ॥३१॥
हिंसा भार्या त्वधर्मस्य ततो जज्ञे तथानृतम् । कन्या च निकृतिस्ताभ्यां भयं नरकमेव च ॥३२॥
माया च वेदना चैव मिथुनं त्विदमेतयोः । तयोर्जज्ञेऽथ वै माया मृत्युं भूतापहारिणम् ॥३३॥
वेदना स्वसुतं चापि दुःखं जज्ञेऽथ रौरवात् । मृत्योर्व्याधिजराशोकतृष्णाक्रोधाश्च जज्ञिरे ॥३४॥
दुःखोत्तराः स्मृता ह्येते सर्वे स्वधर्मलक्षणाः । नैषां पुत्रोऽस्ति वै भार्या ते सर्वे ह्यूर्ध्वरेतसः ॥३५॥
रौद्राण्येतानि रूपाणि विष्णोर्मुनिवरात्मज । नित्यप्रलयहेतुत्वं जगतोऽस्य प्रयान्ति वै ॥३६॥
दक्षो मरीचिरत्रिश्च भृग्वाद्याश्च प्रजेश्वराः । जगत्यत्र महाभाग नित्यसर्गस्य हेतवः ॥३७॥
मनवो मनुपुत्राश्च भूपा वीर्यधराश्च ये । सन्मार्गनिरताः शूरास्ते सर्वे स्थितिकारिणः ॥३८॥

श्रीमैत्रेय उवाच

येयं नित्या स्थितिर्ब्रह्मन्नित्यसर्गस्तथेरितः । नित्याभावश्च तेषां वै स्वरूपं मम कथ्यताम् ॥३९॥

श्रीपराशर उवाच

सर्गस्थितिविनाशांश्च भगवान्मधुसूदनः । तैस्तै रूपैरचिन्त्यात्मा करोत्यव्याहतो विभुः ॥४०॥
नैमित्तिकः प्राकृतिकस्तथैवात्यन्तिको द्विज । नित्यश्च सर्वभूतानां प्रलयोऽयं चतुर्विधः ॥४१॥
ब्राह्मो नैमित्तिकस्तत्र शेतेऽयं जगतीपतिः । प्रयाति प्राकृते चैव ब्रह्माण्डं प्रकृतौ लयम् ॥४२॥
ज्ञानादात्यन्तिकः प्रोक्तो योगिनः परमात्मनि । नित्यः सदैव भूतानां यो विनाशो दिवानिशम् ॥४३॥
प्रसूतिः प्रकृतेर्या तु सा सृष्टिः प्राकृता स्मृता । दैनन्दिनी तथा प्रोक्ता यान्तरप्रलयादनु ॥४४॥

सभी धर्म के पुत्र हैं । रति ने काम से हर्ष नामक धर्म के पौत्र को उत्पन्न किया ॥२९-३१॥ अधर्म की पत्नी हिंसा से अनृत नामक पुत्र पैदा हुआ तथा निकृति नाम की कन्या उत्पन्न हुयी । उन दोनों के पुत्र भय तथा नरक हुए एवं और उनकी माया तथा वेदना नामक दो पुत्रियाँ हुयीं । उन दोनों में से माया ने सभी जीवों का विनाश करने वाले मृत्यु नामक पुत्र को पैदा किया ॥३२-३३॥ वेदना के पति रौरव थे उससे उसका दुःख नामक पुत्र हुआ । मृत्यु की व्याधि, जरा (बुढ़ापा), शोक, तृष्णा तथा क्रोध नामक सन्तानें हुयीं ॥३४॥ ये सब अधर्म स्वरूप हैं तथा ये दुःखोत्तर के नाम से अभिहित किए जाते हैं । इन सबों की न तो कोई स्त्री हैं और न तो कोई सन्तान । ये सबके सब ऊर्ध्वरेता हैं ॥३५॥ हे श्रेष्ठ मुनि के पुत्र मैत्रेय ! ये भगवान् विष्णु के अत्यन्त भयङ्कर रूप हैं । ये ही जगत् के नित्य प्रलय के कारण बनते हैं । हे महाभाग ! दक्ष, मरीचि, अत्रि तथा भृगु आदि प्रजापति ये संसार के नित्य सर्ग के कारण हैं ॥३७॥ सन्मार्ग परायण, शूरवीर मनु, मनु के पुत्र राजा गण पराक्रमी हैं और ये सभी जगत् की स्थिति को बनाये रखने वाले हैं ॥३८॥ **श्रीमैत्रेयजी ने कहा—** हे ब्रह्मन् ! आपने जो नित्य सर्ग, नित्य स्थिति तथा नित्य प्रलय कहा है, आप इन सबों के स्वरूप को मुझे बतलायें । **श्रीपराशर महर्षि ने कहा—** अव्याहत गति (जिनकी गति कहीं भी नहीं रुकती हैं), अचिन्त्यात्मा (जिनके स्वरूप का चिन्तन सामान्य बुद्धि के द्वारा नहीं किया जा सकता) व्यापक भगवान मधुसूदन ही अपने विभिन्न मन्वादि रूपों से सर्ग, स्थिति तथा विनाश करते रहते हैं ॥४०॥ हे द्विज! सभी भूतों के चार प्रकार के प्रलय होते हैं— नित्य, नैमितिक, प्राकृतिक और आत्यन्तिक् ॥४१॥ उनमें से नैमित्तिक प्रलय ही ब्राह्म प्रलय है जिसमें जगत् के स्वामी ब्रह्माजी कल्प के अन्त में शयन करते हैं । प्राकृतिक प्रलय में ब्रह्माण्ड प्रकृति में लीन हो जाता है ॥४२॥ ज्ञान के द्वारा योगियों का परमात्मा में लीन हो जाना ही आत्यन्तिक लय

भूतान्यनुदिनं यत्र जायन्ते मुनिसत्तम। नित्यसर्गो हि स प्रोक्तः पुराणार्थविचक्षणैः ॥४५॥
एवं सर्वशरीरेषु भगवान्भूतभावनः। संस्थितः कुरुते विष्णुरुत्पत्तिस्थितिसंयमान् ॥४६॥
सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तयः सर्वदेहिषु। वैष्णव्यः परिवर्त्तन्ते मैत्रेयाहर्निशं समाः ॥४७॥
गुणत्रयमयं ह्येतद्ब्रह्मन् शक्तित्रयं महत्। योऽतियाति स यात्येव परं नावर्त्तते पुनः ॥४८॥

इति श्रीविष्णुमहापुराणे प्रथमेंऽशे सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

आठवाँ अध्याय

श्रीपराशर उवाच

कथितस्तामसः सर्गो ब्रह्मणस्ते महामुने। रुद्रसर्गं प्रवक्ष्यामि तन्मे निगदतः शृणु ॥१॥
कल्पादावात्मनस्तुल्यं सुतं प्रध्यायतस्ततः। प्रादुरासीत्प्रभोरङ्के कुमारो नीललोहितः ॥२॥
रुदोद सुस्वरं सोऽथ प्राद्रवद्द्विजसत्तम। किं त्वं रोदिषि तं ब्रह्मा रुदन्तं प्रत्युवाच ह ॥३॥
नाम देहीति तं सोऽथ प्रत्युवाच प्रजापतिः। रुद्रस्त्वं देव नाम्नासि मा रोदीर्धैर्यमावह।

कहलाता है, सभी जीवों का जो रात-दिन लय होता रहता है, उसे ही नित्य प्रलय कहते हैं ॥४३॥ प्रकृति से महत् तत्त्व आदि की जो सृष्टि होती है, उसे प्राकृत सृष्टि कहते हैं। अवान्तर प्रलय के पश्चात् ब्रह्माजी के द्वारा जो चराचर जगत् की प्रतिदिन सृष्टि होती रहती है, उसे ही दैनन्दिनी सृष्टि कहते हैं ॥४४॥ हे मुनियों में श्रेष्ठ ! जिसमें जीवों की प्रतिदिन उत्पत्ति होती रहती है, उसे ही पुराणों के अर्थ जानने वाले नित्य सृष्टि कहते हैं ॥४५॥ इस प्रकार से भूतभावन (जीवों को आप्यायित करने वाले) भगवान् विष्णु सभी शरीरों के भीतर स्थित होकर जगत् की सृष्टि, स्थिति और प्रलय करते रहते हैं ॥४६॥ हे मैत्रेय ! समस्त शरीरों में सृष्टि, स्थिति तथा संहार की वैष्णवी शक्तियों का समान रूप से रात-दिन सञ्चार होता रहता है ॥४७॥ हे ब्रह्मन् ! ये तीनों वैष्णवी शक्तियाँ गुणत्रय स्वरूप एवं महती शक्तियाँ हैं, जो इन तीनों को पार कर जाता है, वह भगवान् विष्णु के लोक में चला जाता है, वह पुनः इस संसार में नहीं आता है ॥४८॥

इस तरह से श्रीविष्णुमहापुराण के प्रथम अंश के सातवें अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ॥७॥

रौद्र सृष्टि भव आदि सात रुद्रों के स्थान तथा उनकी पत्नी पुत्र आदि का वर्णन एवं भगवान् तथा लक्ष्मीजी की सर्व व्यापकता का वर्णन

श्रीपराशर महर्षि ने कहा— हे महामुने ! आपको मैं ब्रह्माजी के तामस सर्ग को बतला चुका हूँ; अब मैं आपको रौद्र सर्ग सुनाता हूँ। उसे आप सुनें ॥१॥ कल्प के प्रारम्भ में ब्रह्माजी अपने ही समान पुत्र का जब चिन्तन कर रहे थे उस समय उनकी गोद में एक बालक पैदा हुआ ॥२॥ उसका वर्ण नील लोहित था ॥२॥ हे द्विजश्रेष्ठ ! वह बालक जोर-जोर से रोने लगा और इधर-उधर दौड़ने लगा। उस रोते हुए बालक से ब्रह्माजी ने पूछा तुम क्यों रो रहे हो ?॥३॥ उस बालक ने कहा— आप मेरा नाम बतलाइये। इस पर प्रजापति ने कहा— हे देव ! तुम्हारा